## {भारतीयविद्वत्परिषत्} कदळीविवाहः

Inbox

Search for all messages with label Inbox Remove label Inbox from this conversation



## Mahamaho. Subrahmanyam Korada

Sat, Nov 18, 4:49 AM

Saturday 18Nov2023

to byparishat

## नमो विद्वद्भ्यः

Recently , I have suggested to a mother to go for कदळीविवाह (marriage with a banana tree ) for her daughter before the actual विवाह -

Unfortunately the कुजदोष in the latter's जातकचक्रम् is not nullified --

धने व्यये च पाताळे जामित्रे चाष्टमे कुजः । स्त्रीणां भर्तृविनाशाय पुंसां भार्याविनाशकम् ॥ when counted from लग्न - चन्द्र - शुक्र -- if कुज is there in any one of 2 -4 - 7 - 8 - 12 places then it will be क्जदोष ।

क्जदोष is nullified if --

- 1. the same is there in the जातकचक्रम्s of both वधू and वर
- 2. गुरुसंबन्ध -- कुज being looked (दृष्टि -- 7,5,9) by गुरु -- both कुज and गुरु in the same राशि -- परिवर्तन (swap) of गुरु and कुज
- 3. the native is born in --- स्वक्षेत्र of कुज , viz मेष and वृश्चिक -- उच्चक्षेत्र of कुज , viz मकर -- मित्रस्क्षेत्र of कुज viz कर्कटक (चन्द्र) , सिंह(रवि) धनुः and मीन(गुरु) -- अर्केन्दुक्षेत्रजातानां पीडको न भवेत् कुजः । स्वोच्चमित्रभजातानां पीडको न भवेत्कुजः (देवकेरळम्)।

Some six decades ago my father was supervising कदळीविवाह -- performing विवाह with a कदळीवृक्ष (a banana tree) in order to nullify the कुजदोष । . This is generally done after the first विवाह failed . But if the कुजदोष is seen strong enough to disturb the conjugal life of bride or groom one may go for कदळीविवाह simply to thwart the evil effect of कुजदोष ।

The question of द्वितीयविवाह , opposed in मनुस्मृति etc. , is discussed a couple of months ago and decided that a girl should go for पुनर्विवाह as suggested by पराशर (कलौ पराशरस्मृतिः)--

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ । पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥ **४-३० पराशरस्मृतिः** 

This is a विधि -- अन्यः पतिः does not mean a protector but a real पति just like the earlier one .

मेधातिथि , a commentator on मनुस्मृति says (5-157) -- यतु नष्टे ... विधीयते इति तत्र पालनात् पतिम् अन्यम् आश्रयेत सैरन्धकर्मादिना आत्मवृत्त्यर्थम् etc. . --- पा रक्षणे (अदादिः) - पातेर्डतिः(उणादिः 4-57) - पतिः ।

वस्तुतः अयं च योगरूढिः ।

The above व्याख्यानम् of मेधातिथि is against the मीमांसान्याय --' न विधौ परः शब्दार्थः' -- it will be discussed separately . म म गङ्गानाथ झा supports him .

कुंभविवाहः ( निर्णयसिन्धुः - तृतीयपरिच्छेदः - प्रतिकूलादि ) ---

अथ अपरिहार्त्यं कन्याया वैधव्ययोगे विशेष उच्यते --- मार्कण्डेयपुराणॆ --

बालवैधव्ययोगे त् क्ंभद्रप्रतिमादिभिः ।

कृत्वा लग्नं ततः पश्चात् कन्योद्वाहेति चपरे ॥ (कुंभ - द्रु - प्रतिमादिभिः -- with a pot / tree / idol etc.) .

अत्र **पुनर्दोषाभाव उक्तः विधानखण्डे** --

स्वर्णांब्पिप्पलानां च प्रतिमा विष्ण्रूपिणीम् ।

तया सह विवाहे तु पुनर्भूत्वं न जायते ॥ (पुनर्भूः = a girl going for second marriage) सूर्यारुणसंवादे --

विवाहात् पूर्वकाले च चन्द्रताराबलान्विते । विवाहोक्ते च तां कन्यां कुंभेन सह चोद्वहेत् ।.....

Some स्मृतिs prescribe विवाह with अश्वत्थवृक्ष / अर्कवृक्ष also . विद् पाण्डुरङ्ग वामन काणे (p546, Volume 2 Part 1 , History of Dharmasastra, BORI, Pune, 1997) provides a brief summary of the ceremony.

धन्यो'स्मि

Dr.Korada Subrahmanyam Adju.Professor , Dept of Heritage Science and Technology, IIT, Hyderabad 299 Doyen , Serilingampally, Hyderabad 500 019 Ph:09866110741 Skype Id: Subrahmanyam Korada

Skype Id: Subrahmanyam Korada Blog: <u>Koradeeyam.blogspot.in</u>